कार्य करती है, उसके मन पर परिस्थितियों का क्या असर पड़ता है ? साथ ही बाह्य उत्तेजनाओं (Stimuli) द्वारा मनुष्य के मन पर क्या प्रतिक्रिया होती है। इन सभी बातों का अध्ययन करना मनोविज्ञान का ही कार्य है। हर मानवीय कार्य मनोविज्ञान से सम्बन्धित होता है और सैन्य विज्ञान भी एक मानवीय विज्ञान है इसलिये इन दोनों का आपसी सम्बन्ध होना स्वाभाविक है।

सेना मनुष्य का एक समुदाय है। इसमें मनोवैज्ञानिक परीक्षण के आधार पर योग्य सैनिकों का चयन होता है। आधुनिक घातक एवं भयंकर युद्ध मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों के आधार पर ही लड़े जाते हैं। किसी न किसी तरह से अपनी सेना को उत्साहित कर शत्रु सेना को निरुत्साहित कर मनोवैज्ञानिक तरीकों से युद्ध में विजय का आलिंगन किया जाता है। 'कौटिल्य' ने भी शत्रु दल में मतभेद पैदा कर उसे निरुत्साहित करने के तरीकों का वर्णन किया है। कौटिल्य का यह भी कहना है कि—"धनुर्धारी के धनुष से छोड़ा हुआ बाण सम्भव है किसी एक भी पुरुष को मारे या न मारे, परन्तु बुद्धिमान व्यक्ति के द्वारा किया हुआ बुद्धि का प्रयोग गर्भस्थ प्राणियों को भी नष्ट कर देता है।" यह मनोवैज्ञानिक विचार सैनिक विजय हेतु भयानक शस्त्र से भी अधिक महत्व रखता है।

द्वितीय विश्व युद्ध में विजय प्राप्ति हेतु मनोवैज्ञानिक तरीकों का ही आश्रय लिया गया। प्रथम एवं द्वितीय विश्व-युद्ध के बीच उभरते हुए नये राष्ट्रनायक हिटलर ने तो इस कार्य में पूर्ण दक्षता ही प्राप्त कर रखी थी। **बार्कर** कहते हैं—"मानवीय क्रियाओं की उलझनों को सुलझाने के लिए मनोवैज्ञानिक कुंजी का प्रयोग आज के दिन के लिये चलन बन गया है। यदि हमारे पूर्वज प्राणि वैज्ञानिक दृष्टि से सोचते हैं तो हम मनोवैज्ञानिक दृष्टि से।"[1]

(4) राजनीतिशास्त्र एवं सैन्य विज्ञान का सम्बन्ध

राजनीतिशास्त्र समाज विज्ञान का वह अंग है जिसके अन्तर्गत मानवीय जीवन के राजनीतिक पक्ष का और जीवन के इस पक्ष से सम्बन्धित राज्य, सरकार तथा अन्य सम्बन्धित संगठनों का अध्ययन किया जाता है। दूसरे शब्दों में हम यह भी कह सकते हैं कि राजनीतिशास्त्र राज्य के संगठन, उद्देश्य, स्वरूप आदि का अध्ययन करता है। वह राज्य की उत्पत्ति के पूर्व की अवस्था तथा उत्पत्ति के कारणों का भी अध्ययन करता है। युद्ध में जब सामाजिक जीवन अस्त-व्यस्त एवं शान्तिपूर्ण हो जाता है तब राजनीतिशास्त्र ऐसे विचारों को प्रस्तुत करता है कि राज्य में अव्यवस्था न फैले। ऐसी स्थिति में युद्ध के कारणों, उपकरणों तथा परिणामों पर विचार करना अनिवार्य हो जाता है लेकिन यह ज्ञान सैन्य विज्ञान द्वारा ही प्रतिपादित किया जाता है।

अतः राजनीतिशास्त्र एवं सैन्य विज्ञान का सम्बन्ध राज्य में व्यवस्था तथा शान्ति बनाये रखने के लिए अपरिहार्य है। राज्य की नीति निर्धारण करते समय सैन्य नीति को पृथक् नहीं रखा जा सकता। सैन्य विज्ञान के छात्रों को अपने तथा अपने पड़ोसी राज्यों की नीति का अध्ययन करना पड़ता है। यही कारण था कि प्राचीन भारतीय शासकों को राजनीति के साथ सैन्य विज्ञान की शिक्षा प्राप्त करना आवश्यक था। कौटिल्य ने राजकुमारों की शिक्षा में प्रशासनिक विधाओं के साथ सैन्य विज्ञान की शिक्षा को महत्वपूर्ण माना है।

(5) अर्थशास्त्र एवं सैन्य विज्ञान का सम्बन्ध

अर्थशास्त्र मानव जीवन की उन तमाम क्रियाओं का अध्ययन करता है जिनका सम्बन्ध सम्पत्ति से है। प्रसिद्ध अर्थशास्त्री **मार्शल** के शब्दों में—"अर्थशास्त्र जीवन के साधारण व्यापार में मनुष्य का अध्ययन है। यह व्यक्तिगत और सामाजिक कार्यों के उस भाग का परीक्षण करता है जिसका भौतिक पदार्थों की प्राप्ति एवं उनके प्रयोग के साथ अत्यन्त

Scanned by CamScanner

घनिष्ट सम्बन्ध है।" इसके द्वारा धन के उत्पादन, वितरण, उपभोग, लेन देन के सिद्धान्तों का अध्ययन किया जाता है। सैन्य क्रियायें मानव समाज की आर्थिक आवश्यकताओं की देन हैं। आदिम अवस्था में भोजन की तलाश ने ही मनुष्य को जंगली जीव-जन्तुओं के समूहों से संघर्ष करना सिखा दिया था और बाद में स्थाई सम्पत्ति की रक्षा हेतु मानवीय संघर्ष होने लगे। धन अर्जन की लालसा ने ही पूरे विश्व को दो महान् गुटों में विभक्त कर दिया। पहला पूर्व सोवियत रूस और दूसरा अमेरिका।

वर्तमान समय में तो सरकार के स्वरूप भी आर्थिक व्यवस्था के आधार पर ही निर्धारित किये जाते हैं। कार्ल मार्क्स ने तो यहाँ तक कहा है कि—"किसी युग के सम्पूर्ण सामाजिक जीवन के स्वरूप का निश्चय आर्थिक परिस्थितियाँ ही करती हैं।" समाज की आर्थिक स्थिति का सैन्य बल पर गहरा प्रभाव पड़ता है। जिस देश के पास खनिज सम्पत्ति अधिक है वह नये-नये प्रकार के आविष्कारों में रत है। जैसे अमेरिका, रूस, फ्रांस, ब्रिटेन, चीन, भारत आदि। यदि एक तरफ आर्थिक स्थिति सैन्य क्रियाओं को प्रभावित करती है तो वहीं दूसरी तरफ सैनिक क्रियायें भी समाज की आर्थिक स्थिति को प्रभावित किये बिना नहीं छोड़तीं। वर्तमान सैन्य विज्ञान के विद्यार्थियों को संसार के प्रत्येक राष्ट्र की आर्थिक स्थिति का ज्ञान प्राप्त करना इसीलिये आवश्यक है क्योंकि युद्ध के समय उसी ज्ञान के ऊपर वह अपनी शक्ति का संगठन करता है। आचार्य शुक्र ने "राष्ट्रीय आय का एक तिहाई भाग सैन्य बल पर ही खर्च करने का प्रस्ताव किया था।" परन्तु आज भारत अपनी राष्ट्रीय आय का 4% और पाकिस्तान अपनी राष्ट्रीय आय का 7% भाग रक्षा के मदों पर व्यय करते हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि इन दोनों विषयों में घनिष्ठ अटूट सम्बन्ध है।

(6) भूगोल एवं सैन्य विज्ञान का सम्बन्ध

भूगोल हमें पृथ्वी की बनावट, जलवायु, उपज एवं खनिज आदि का अध्ययन कराता है। हार्टशोर्न महोदय का कहना है कि—"भूगोल पृथ्वी तल पर एक स्थान से दूसरे स्थान पर पाई जाने वाली विभिन्नताओं का यथार्थ, क्रमबद्ध एवं युक्ति संगत वर्णन तथा व्याख्या करता है।" (Geography is concerned with accurate, orderly and national description and interpretation of the variable character of the Earth surface.) मनुष्य की उत्पत्ति पृथ्वी पर भौगोलिक वातावरण के अनुकूल होने के कारण ही हुई है। मनुष्य की अधिकांश आवश्यकतायें पृथ्वी से उत्पन्न वस्तुओं से ही पूरी होती हैं। मनुष्य के जीवनयापन के ढंग, रहन-सहन, रीति-रिवाज, बोल-चाल, भोजन तथा वस्त्र आदि पर जलवायु और वहाँ के वातावरण का प्रभाव पड़ता है। ठण्डे प्रदेश जैसे यूरोप निवासी चुस्त वस्त्र पहनते हैं और कार्य तेजी के साथ करते हैं लेकिन गर्म प्रदेश जैसे एशिया महाद्वीप के निवासी आलसी एवं सुस्त होते हैं और ढीले-ढीले वस्त्र धारण करते हैं। वातावरण एवं जलवायु का प्रभाव तो इतना अधिक प्रभावशाली है कि एक ही प्रदेश के एक जिले के, जिले के एक गाँव के और उस गाँव के एक घर के एक ही माँ के तीन पुत्र हैं जो एक ही पिता के रक्त द्वारा पैदा हुए हैं। इन तीनों पुत्रों के खान-पान, रहन-सहन, बोलचाल, वस्त्र आदि में बहुत अंतर हो जाता है। ऐसे बहुत से प्रभाव प्रत्येक घर में मौजूद हैं।

सैन्य विज्ञान के विद्यार्थी के लिए आवश्यक हो जाता है कि वह पृथ्वी की बनावट, अर्थात् नदी, पहाड़, झील, घाटी, दलदल, मरुस्थल तथा वहाँ की जलवायु वर्षा आदि का अध्ययन करे, क्योंकि भौगोलिक परिस्थितियों पर आवागमन के रास्ते एवं सैन्य क्रियाओं के स्थान तय किये जा सकते हैं। प्रत्येक सेना का सेनाणति यह जानने की कोशिश करता है कि रणक्षेत्र की भूमि किस प्रकार की है, वहां की जलवायु कैसी है। किन दिनों में गर्मी और किन दिनों सर्दी पड़ती है, वहाँ किस चीज की उपज होती है। भौगोलिक परिस्थिति अनुसार

Scanned by CamScanner

सेना के संगठन, अस्त्रशस्त्र, साज-सामान आदि में परिवर्तन किया जाता है। किस प्रकार की भूमि, जलवायु में किस प्रकार की सेना का किस व्यूह-रचना में प्रयोग किया जाना चाहिए। इन बातों का निरूपण पुराणों में मनुस्मृति एवं कौटिल्य के अर्थशास्त्र आदि ग्रंथों में मिलता है। यही कारण है कि युद्ध की सफल योजनायें भौगोलिक आधार पर ही तैयार की जाती हैं। एक राष्ट्र अपने यहाँ तीनों सेनाओं में से किसे अधिक महत्व प्रदान करता है—यह उस देश की भौगोलिक स्थिति पर निर्भर करता है। इतना ही नहीं जनरल वेवल ने लिखा है कि "किसी देश का भूगोल ही वहाँ की लड़ाई को तय करता है।"[2]

(7) सांख्यिकीशास्त्र (स्टेटिस्टिक्स) एवं सैन्य विज्ञान का सम्बन्ध

सांख्यिकीशास्त्र द्वारा समाज की परिस्थितियों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए तथ्यों को एकत्रित किया जाता है तथा उनकी गणना की जाती है। आधुनिक युग में सभी देशों ने इस शास्त्र को महत्वपूर्ण स्थान दे रखा है। किसी भी देश को सैन्य संगठन और उनके भरण पोषण की नीति निर्धारित करने से पूर्व जन-शक्ति, सम्पत्ति तथा विश्व के अन्य देशों की सैन्य-शक्ति के बारे में प्राप्त आंकड़ों पर विचार करना आवश्यक हो जाता है। यह कार्य केवल इसी शास्त्र का है। देश में आंतरिक शांति स्थापना तथा बाह्य आक्रमण से रक्षा हेतु, कितनी सेना आवश्यक होगी आदि का ज्ञान इसी विषय के सहारे ही हो सकता है।

सेना को कितना भोजन, वस्त्र तथा अन्य वस्तुओं की आवश्यकता होगी, देश के उत्पादन से उसकी पूर्ति हो सकेगी या नहीं, हथियारों को कितनी मात्रा में एकत्रित करना तथा उनका निर्माण अपने राष्ट्र में सम्भव है या नहीं आदि की जानकारी देश की वस्तुओं के उत्पादन सम्बन्धी तथ्यों के संग्रह करने से ही हो सकती है। युद्ध के समय योजना बनाने वाले सैन्य पदाधिकारियों को प्रत्येक समय अपनी सैन्य शक्ति एवं साधनों का तथा शत्रु की सैन्य-शक्ति व साधनों का पूर्ण ज्ञान रखना आवश्यक है, अन्यथा सम्पूर्ण योजना असफल हो सकती है। आजकल वैज्ञानिक प्रगति से युद्ध विश्वव्यापी होने लगे हैं जिनके लिए अपार जनशक्ति एवं अधिक मात्रा में साधनों की आवश्यकता होती है। ऐसी स्थिति में प्रत्येक राष्ट्र के लिए अनिवार्य हो गया है कि वह सांख्यिकीशास्त्र पर अधिक बल दे। अतः हम कह सकते हैं कि सांख्यिकीशास्त्र और सैन्य विज्ञान में अत्यधिक घनिष्ठ सम्बन्ध है।

(8) भौतिक विज्ञान एवं सैन्य विज्ञान का सम्बन्ध

भौतिक शास्त्र के अन्तर्गत हम पदार्थ, शक्ति, ऊर्जा, ताप, प्रकाश आदि बातों का अध्ययन करते हैं। वैज्ञानिकों का मत है इस सृष्टि का निर्माण पदार्थ और शक्ति के सम्मिश्रण से हुआ है। विश्व के सभी पदार्थ पृथ्वी के छोटे तिनके से लेकर, सूर्य, चन्द्र, तारे सभी इसी पदार्थ की रचना का फल हैं। यहाँ तक कि जलयान, वायुयान, रेल, मोटर, रेडियो आदि का आविष्कार इसी की देन है। इन सभी ने आधुनिक युद्ध का तो ढाँचा ही बदल डाला है। बड़े-बड़े भयंकर हथियारों, भयानक तोपों एवं स्वचालित यंत्रों, टैंकों, पनडुब्बी तथा घातक परमाणु बमों का प्रादुर्भाव इसी भौतिक विज्ञान की महान् कृपा है। यही कारण है कि सैनिक संगठन, युद्ध प्रणाली आदि सभी नवीन भौतिक विकास के आधार पर परिवर्तित होते जा रहे हैं।

वर्तमान आधुनिक भयंकर एवं विध्वंसकारी युद्ध का प्रभाव समस्त मानव समुदाय पर पड़ता है। सम्भवतः इसीलिये एक विद्वान का कहना है कि आधुनिक युद्ध प्रयोगशालाओं और कल कारखानों में बैठकर ही लड़े जाते हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि भौतिक विज्ञान और सैन्य विज्ञान का सम्बन्ध अति निकट का है।

Scanned by CamScanner

(9) रसायन विज्ञान एवं सैन्य विज्ञान का सम्बन्ध

रसायनशास्त्र में द्रव्य की संरचना, गुण और उन परिवर्तनों का अध्ययन करते हैं जो कि द्रव्य के विभिन्न रूपों में परस्पर होते रहते हैं। रसायनों के सम्मिश्रण से जहाँ हम विभिन्न प्रकार की औषधियाँ प्राप्त करते हैं और इनके द्वारा रोगों की रोकथाम तथा जीवाणुओं को नष्ट करने में सहायता मिलती है, वहीं हम इनसे अनेक प्रकार के विस्फोटक पदार्थ जैसे परमाणु बम, हाइड्रोजन बम, विषैली गैसें भी तैयार करते हैं जो विनाश का कार्य करती हैं। रणक्षेत्रों में विषैली गैसों का उपयोग, आग्नेय अस्त्रों का प्रयोग, विस्फोटक बमों का प्रयोग रसायनशास्त्र की ही देन हैं। प्रथम विश्वयुद्ध में जर्मनी ने इन्हीं का सहारा लिया था। इस प्रकार हम देखते हैं कि इन दोनों विषयों में घनिष्ठ सम्बन्ध है।

(10) वनस्पति विज्ञान एवं सैन्य विज्ञान का सम्बन्ध

वनस्पति विज्ञान विभिन्न प्रकार की प्राकृतिक वनस्पतियों के बारे में गहन अध्ययन करता है। कैसी परिस्थिति में किस प्रकार के पेड़ पौधे उग सकते हैं, उनका विकास किन-किन दशाओं में हो सकता है तथा उनका मानव जीवन में क्या उपयोग है ? इन सभी के बारे में वनस्पति विज्ञान अध्ययन करता है। सेना में सैनिकों एवं जानवरों के लिए विभिन्न प्रकार के पेड़ पौधों एवं घासों की आवश्यकता होती है। रण क्षेत्र में आकार गोपन हेतु कृत्रिम पेड़, पौधे, घास, एवं पत्तियों की आवश्यकता होती है। सैनिक किस क्षेत्र में किस प्रकार की वनस्पति का प्रयोग करें इसे वनस्पतिशास्त्र ही बताता है। इतना ही नहीं बहुत सी वनस्पति औषधि के रूप में काम में लाई जाती हैं। इन सबका ज्ञान वनस्पतिशास्त्र से प्राप्त होता है। अतः यह सब बातें यह सिद्ध करती हैं कि सैन्य विज्ञान और वनस्पति विज्ञान का घनिष्ठ सम्बन्ध बहुत पुराना है।

(11) प्राणी (जीव) विज्ञान एवं सैन्य विज्ञान का सम्बन्ध

प्राणि विज्ञान से ज्ञात होता है कि किस भू-प्रदेश में किस प्रकार के पशु या जानवर उत्पन्न होते हैं, उनमें कितनी शक्ति होती है, वे मनुष्य के किस काम आ सकते हैं ? किस प्रकार की परिस्थिति में वे जीवित रह सकते हैं। उनकी नस्लों में कैसे सुधार किया जा सकता है। भारतीय सेना में प्राचीन काल से ही घोड़े, खच्चर, हाथी, ऊँट आदि का प्रयोग होता रहा है। यद्यपि आधुनिक युग में इनका स्थान यान्त्रिक वाहनों ने ग्रहण कर लिया है किन्तु फिर भी इतना तो कहा जा सकता है कि पहाड़ी, रेगिस्तानी, दलदल युक्त क्षेत्र में अभी भी इनका महत्व बना हुआ है। अतः ऐसी स्थिति में प्रत्येक सैन्य अधिकारी के लिए आवश्यक हो जाता है कि वह जानकारी रखे कि किस प्रकार के जानवर कहाँ मिलेंगे और उनकी खाद्य वस्तु क्या है? और उनका किस क्षेत्र में प्रयोग किया जा सकता है। इतना ही नहीं प्राणि विज्ञान से मनुष्य की संरचना का ज्ञान भी होता है। इस प्रकार से स्पष्ट है कि जीव विज्ञान और सैन्य विज्ञान में बहुत गहरा सम्बन्ध है।

(12) चिकित्सा विज्ञान एवं सैन्य विज्ञान का सम्बन्ध

अच्छा स्वास्थ्य ही सैनिकों की बहुत बड़ी सम्पत्ति है। चिकित्सा विज्ञान मनुष्य एवं जानवरों को स्वस्थ रखने, रोग न उत्पन्न होने देने, उपचार करने तथा हताहतों का उपचार करने का कार्य करता है। सैन्य अधिकारियों का यह परम कर्त्तव्य है कि वे अपने सैनिकों के स्वास्थ्य की सदैव देखरेख रखें। शान्तिकाल में सेना को स्वास्थ्यवर्द्धक स्थानों पर रखा जाता है। उनके निवास के मकान, भोजन, वस्त्र आदि सभी स्वास्थ्य के नियमों के अनुसार ही तैयार किये जाते हैं। संग्राम क्षेत्र में सैनिकों के घायल हो जाने पर उचित चिकित्सा की

Scanned by CamScanner

सुविधा तुरन्त मिल जाती है जिससे सैनिकों का मनोबल बना रहता है। सैनिकों की शक्ति को क्षीण होने से रोका जा सकता है।

प्राचीन भारत में चिकित्सा विज्ञान में ब्राह्मण अधिक कुशल थे। ये रणक्षेत्र में आगे नायक (राजा) के साथ रहते थे। **कौटिल्य** के "मतानुसार सेना में घोड़ों और हाथियों की चिकित्सा के लिए भी चिकित्सक नियुक्त किये जाते थे।" आधुनिक युग में अलग-अलग इसकी व्यवस्था है तथा चिकित्सा विभाग बहुत कुशलतापूर्वक अपना कार्य निर्वाह कर रहा है। इस प्रकार चिकित्साशास्त्र और सैन्य विज्ञान का घनिष्ठ सम्बन्ध है।

Scanned by CamScanner